ISSN 2456-4753

बाल दिवस मुबारक हो!

प्लूटो

अंक 4 वर्ष 3

अक्टूबर - नवम्बर, 2018



गौरंग थापर



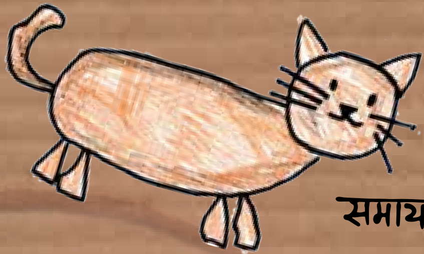


मेहर सिकन्द



सिया कोठारी

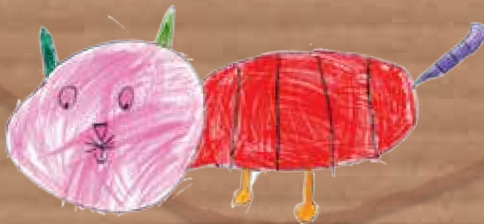




समायरा सूद



नव्या जैन



जसमाइरा

बिल्ली जब चूहे के पीछे भागती है तो मुझे अच्छा लगता है। पर जब वो कुत्ते को देखकर घबरा जाती है तो मेरा मन भी बैठ जाता है।

– द्विजा गाँधी



सना गुप्ता



रेयन रायना

मूल्य ₹60



ज़ेब्रा

एक बात बताना ज़ेब्रा भाई,
तुम्हारे काले रंग पर सफेद धारियाँ हैं
याकि तुम सफेद हो जिस पर काली धारियाँ बनी हैं...

चित्र : नबरीना सिंह

प्लीज़ पटाखे अकेले न फोड़ें...



चित्र : अतनु राय



कँचे

यासिर और फरहा पूरे दिन बस शर्त लगाते रहते। कभी उनमें दौड़ होती। जो जीतता उसे कुछ न कुछ मिल जाता। कभी साइकिल एक हाथ से चलाने की होड़ लगती। फरहा इसमें अकसर जीत जाती। यासिर का निशाना अच्छा था। इसलिए वह कँचे खेलने की ज़िद करता। एक दिन वे कँचे खेल रहे थे। यासिर ने कहा, “दस मिनिट खेलेंगे। अगर मैं जीता तो तेरा बैट मेरा हो जाएगा।” “और अगर मैं जीती तो तेरी फुटबॉल ले लूँगी...।” फरहा बोली।

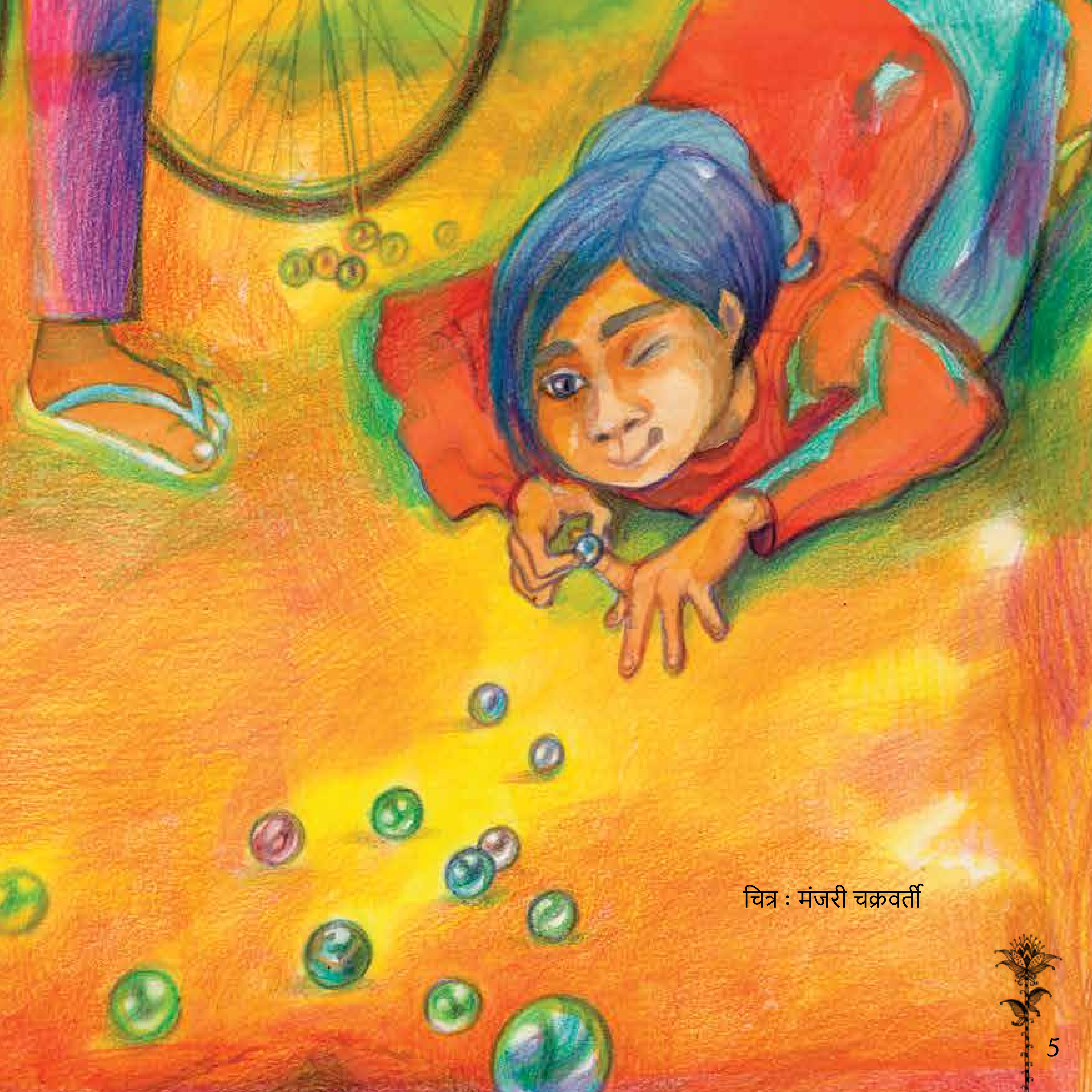
“ठीक है।” यासिर ने उसकी बात मानते हुए कहा।

दोनों कँचे खेलने में लग गए। कभी यासिर जीत जाता। तो कभी फरहा। आज खेल बराबरी का हो रहा था। फरहा आज खूब निशाने लगा रही थी। दस मिनिट पूरे हुए तो कँचों की गिनती हुई। यासिर के पास ग्यारह कँचे थे। और फरहा के पास दस। फरहा ने यासिर के कँचों में से एक को उठाकर दूर फेंक दिया।

यासिर बोला, “मेरा कँचा क्यों फेंका?”

“वो फूटा कँचा था। शर्त तो साबुत कँचों की लगी थी न!”

फरहा ने झट-से साइकिल उठाई और घर की तरफ दौड़ा दी। यासिर उसके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।



चित्र : मंजरी चक्रवर्ती



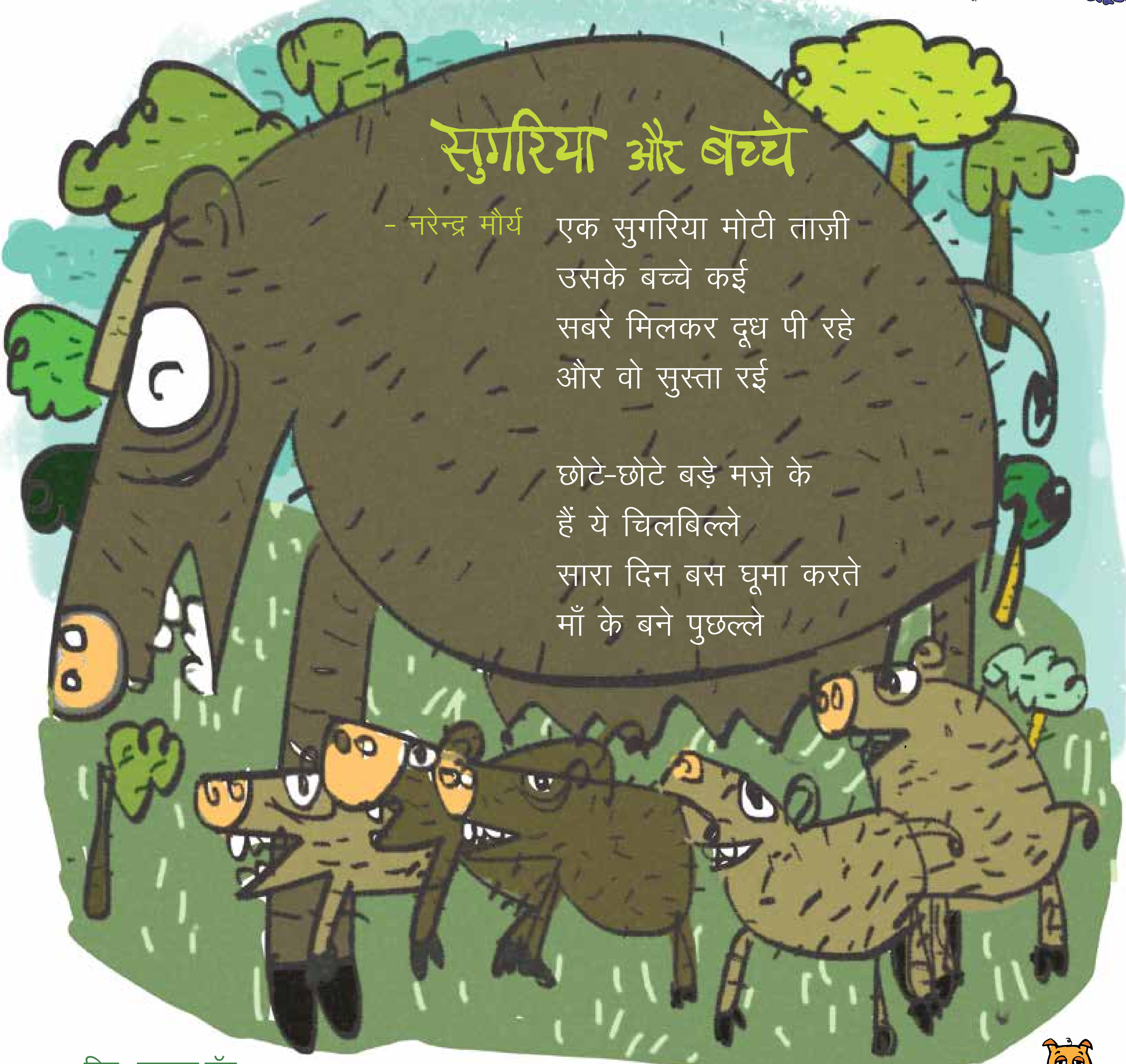
जंगल में जो जुगनू सारे हैं
क्या आसमान के टूटे तारे हैं?

जुगनू

एक चींटी ने
गिन लिए हैं सारे

जितनी चींटियाँ
उतने तारे

- कार्तिक शर्मा
चित्र : वन्दना बिष्ट



सुगरिया और बच्चे

- नरेन्द्र मौर्य

एक सुगरिया मोटी ताज़ी
उसके बच्चे कई
सबरे मिलकर दूध पी रहे
और वो सुस्ता रई

छोटे-छोटे बड़े मज़े के
हैं ये चिलबिल्ले
सारा दिन बस घूमा करते
माँ के बने पुछल्ले

चित्र : स्मारक रॉय

घोंसले में चाँद

चित्र : वृषाली जोशी





नदी में तैरते चाँद को देखकर
कौए के बच्चे ने सोचा।



इसे मेरे घोंसले में
होना चाहिए।







वह उड़ा और उसे घोंसले में ले आया।





बाद में पता चला कि नदी में तो
एक और चाँद है।







वह आता रहा, जाता रहा।
जाता रहा, आता रहा।









एक चाँद हमेशा नदी में बच जाता था।











वह थक गया।
उसे नींद आ गई।



माँ ने घोंसले में पड़े
सारे चाँद नदी को
वापिस कर दिए।



पर एक चाँद घोंसले में ही रह गया। क्योंकि माँ बेटे की नींद नहीं तोड़ना चाहती थी। पर सुबह घोंसले में एक भी चाँद नहीं था।

हरा गुब्बारा

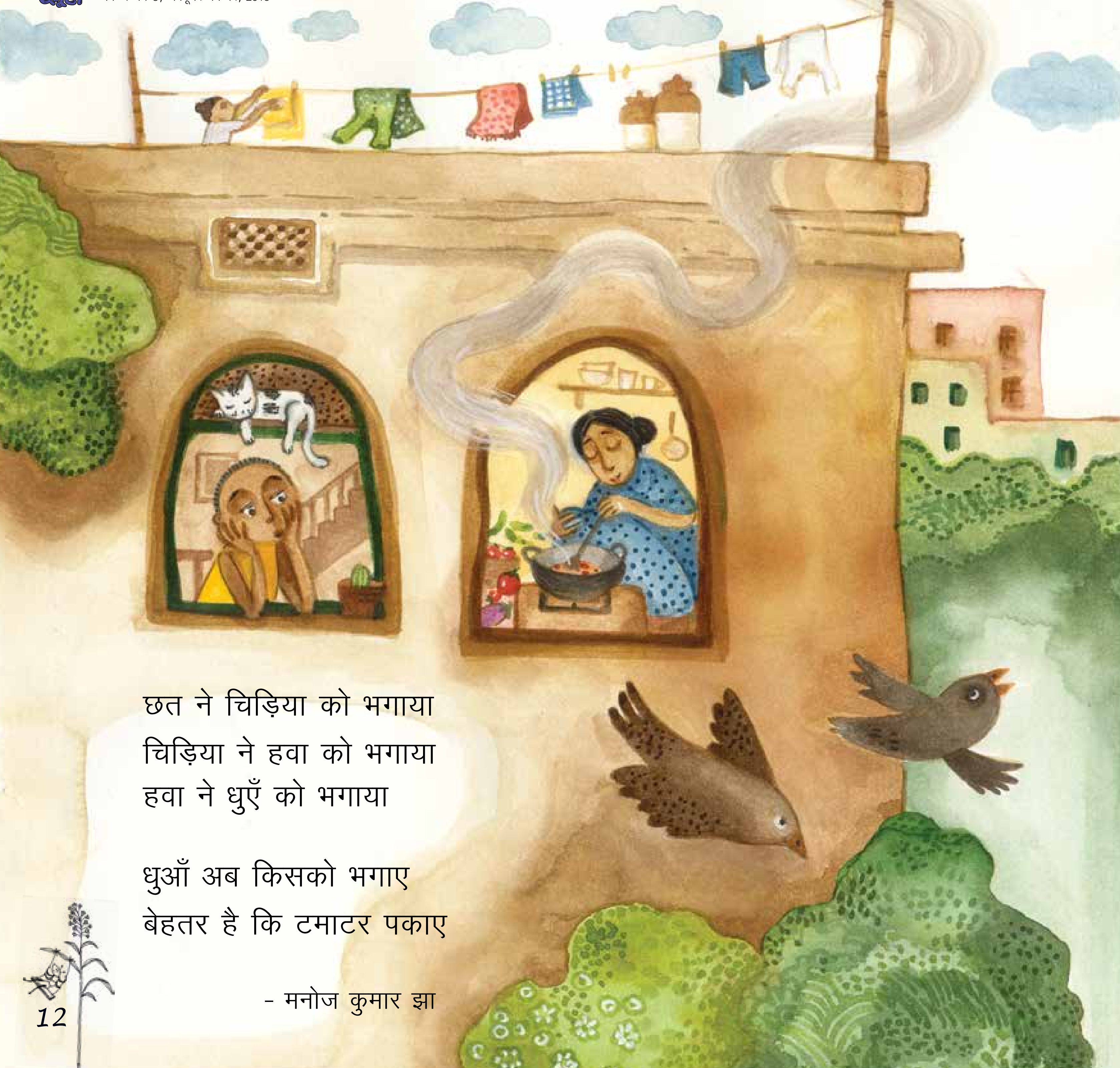


- हर्षवर्धन

मीना का वो हरा गुब्बारा,
उसे फुलाया, गाँठ लगाया।
बिस्तर से गुब्बारा बाँधकर,
सोई वो चादर तान कर।
सुबह-सुबह पर जब वो जागी,
देख गुब्बारा रोते भागी
गाँठ बँधी वैसे के वैसे,
फिर हवा निकल गई कैसे?

चित्र : वन्दना बिष्ट





छत ने चिड़िया को भगाया
चिड़िया ने हवा को भगाया
हवा ने धुएँ को भगाया

धुआँ अब किसको भगाए
बेहतर है कि टमाटर पकाए

- मनोज कुमार झा



चित्र : भार्गव कुलकर्णी

बस में भेड़ें

- प्रभात

बस में एक गड़रिया आया
कंडक्टर उस पर झल्लाया
भाई तू भेड़ों का रेवड़
बस के अन्दर भी ले आया

आम

सुशील शुक्ल

मेरे घर की छत के काँधे
सर रखकर इक आम
चिड़ियों से बातें करता है
रोज़ सुबह से शाम

चिड़ियों के घर रहें सलामत
यूँ शाखें बुनता है
बाबा का हमउम्र है
थोड़ा ऊँचा सुनता है।



चित्र : सौम्या शुक्ला, उमादेवी केथा, सिद्धान्त श्रीवास्तव, नीतू गायकवाड





कौआ कितना काला है
उलट गया उजाला है
चरका दे गई कोयल उसको
कैसा भोला भाला है

– राजेश जोशी

चित्र : स्मारक रॉय



रात की चिरैया...

– परिक्षित सूर्यवंशी

यह नाइटजार है। पत्तियों के ढेर में इसे अलग से पहचानना कितना मुश्किल है। यह दिनभर ऐसे ही बैठी रहती है। और सूरज के छिपते ही अपने काम-धँधे पर निकल पड़ती है। **यह** खुले घोंसले में ही अण्डे देती है। और खुले में ही उन्हें पालती है। सूखी पत्तियों के बीच यह पत्तियों जैसी ही लगती है।

इसलिए शिकारियों की नज़र में आने से भी बच जाती है। कमाल की ट्रिक हैना!

तुमको फोटो में नाइटजार के अलावा कुछ और भी दिखा क्या?



सबक

- मीनाक्षी

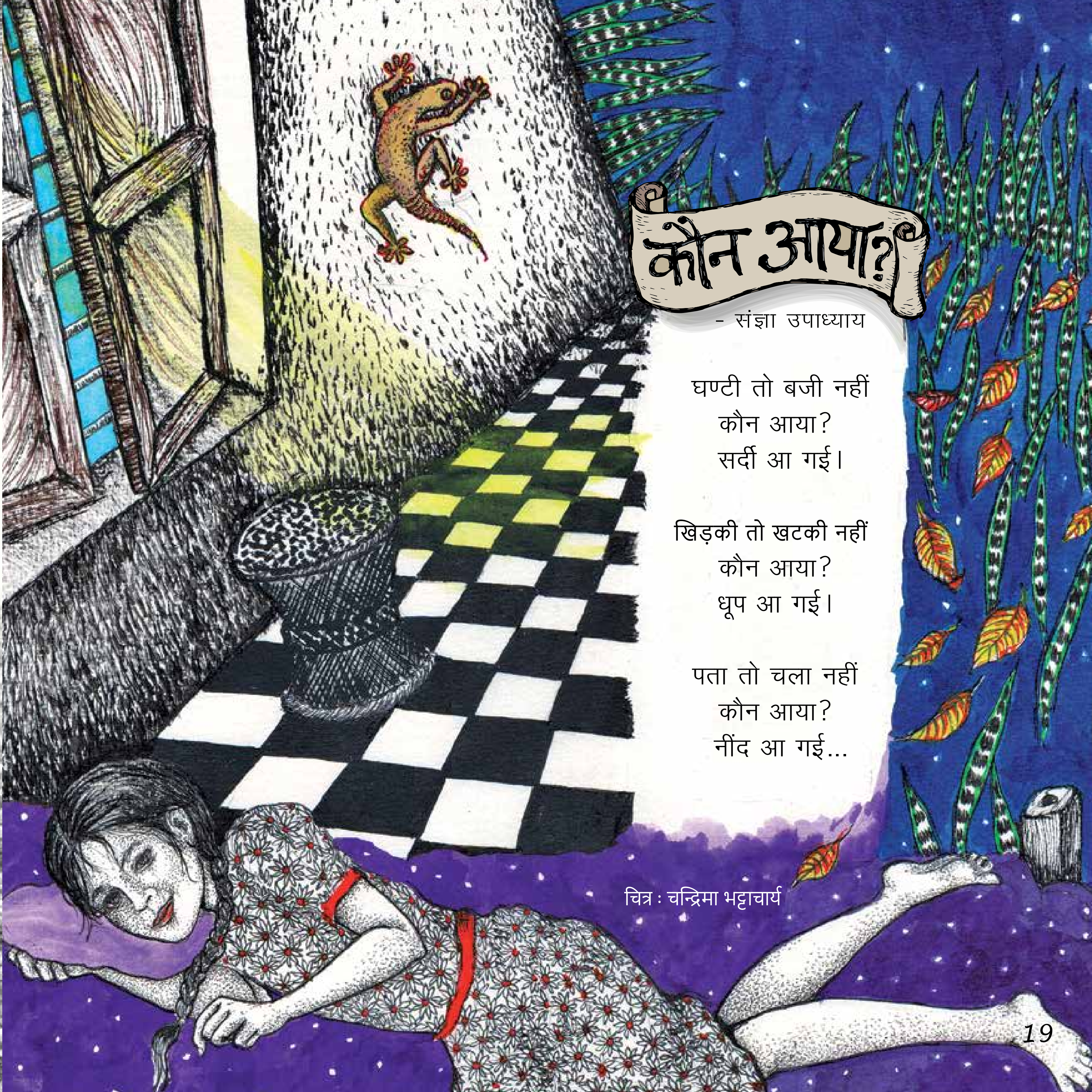


अंकल जी मुझे कभी न भाए
जब भी वो मेरे घर आए
आते ही वो घूरने लगते
लाड़ लड़ाने पास बुलाते
मैं न जाती चिढ़ने लगती

बमुश्किल उनसे हाथ छुड़ाती
एक दिन घर बात चला दी
माँ को सारी खोल बता दी
माँ ने वो ऐसा धमकाया
फिर न कभी मेरे घर आया।



चित्र : प्रोइती रॉय



कौन आया?

- संज्ञा उपाध्याय

घण्टी तो बजी नहीं
कौन आया?
सर्दी आ गई।

खिड़की तो खटकी नहीं
कौन आया?
धूप आ गई।

पता तो चला नहीं
कौन आया?
नींद आ गई...

चित्र : चन्द्रिमा भट्टाचार्य


यहाँ तो कुछ नज़र
नहीं आ रहा !

योगिनी की मूर्ति



दसवीं शताब्दी की यह मूर्ति नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में है।



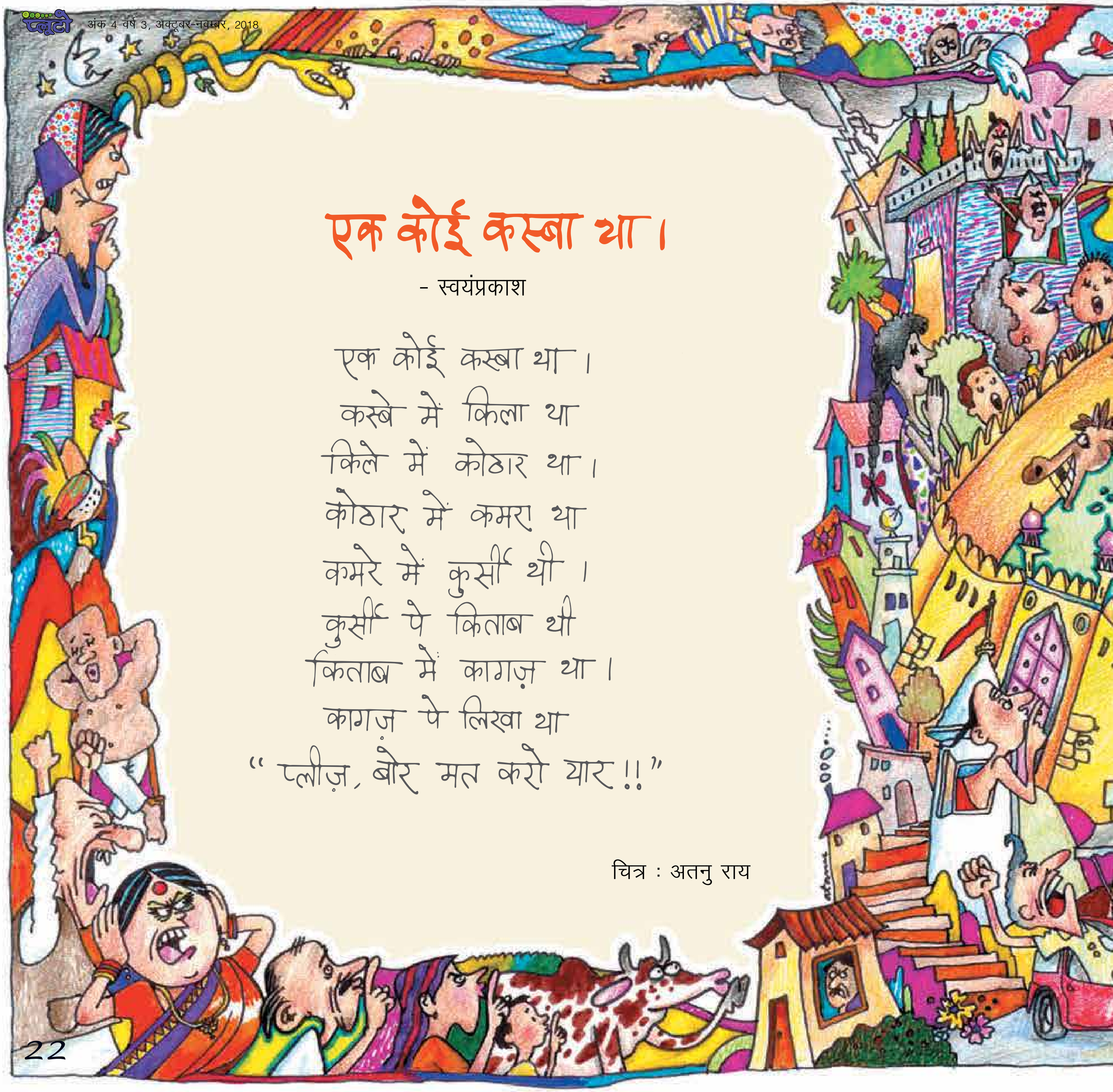
उत्तरप्रदेश के बाँदा ज़िले में एक गाँव है लोखरी। वहाँ के एक मन्दिर से यह मूर्ति मिली है। इस मूर्ति में शरीर औरत का है और सिर एक भैंसे का है। यह औरत एक हंस पर बैठी है।

एक ऐसा चित्र बनाओ जिसमें सर किसी और का हो और शरीर किसी और का।



- अशोक भौमिक





एक कोई कस्बा था।

- स्वयंप्रकाश

एक कोई कस्बा था।
कस्बे में किला था
किले में कोठार था।
कोठार में कमरा था
कमरे में कुर्सी थी।
कुर्सी पे किताब थी
किताब में कागज़ था।
कागज़ पे लिखा था
"प्लीज़, बोर मत करो यार!!"

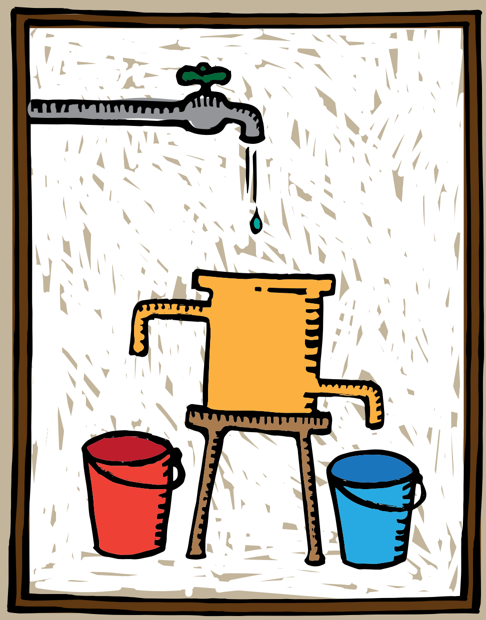
चित्र : अतनु राय





चित्र : शुभम लखेरा

कौन सी बाल्टी पहली भरेगी ?





दादा-दादी

- शशि सबलोक



जब से दादा-दादी आए हैं हिना को
ज़रा देर को भी फुर्सत नहीं मिलती।
हिना मेरा चश्मा...
हिना सौंफ की डिब्बी...
हिना मेरी दवाई...
हिना ये दवा मेरी आँख में डाल दे ज़रा...
हिना चप्पल...
हिना मेरी एक जुराब कहाँ है?
हिना थोड़ा पानी देना बेटा...
हिना दौड़-दौड़कर सारे काम करती।
उसे अच्छा भी बहुत लगता है।
पर **वो** सोचती है कि रेवाड़ी में जहाँ दादा-दादी अकेले रहते हैं
वहाँ ये सारे काम कौन करता होगा।



बात

– मोहम्मद अरशद खान



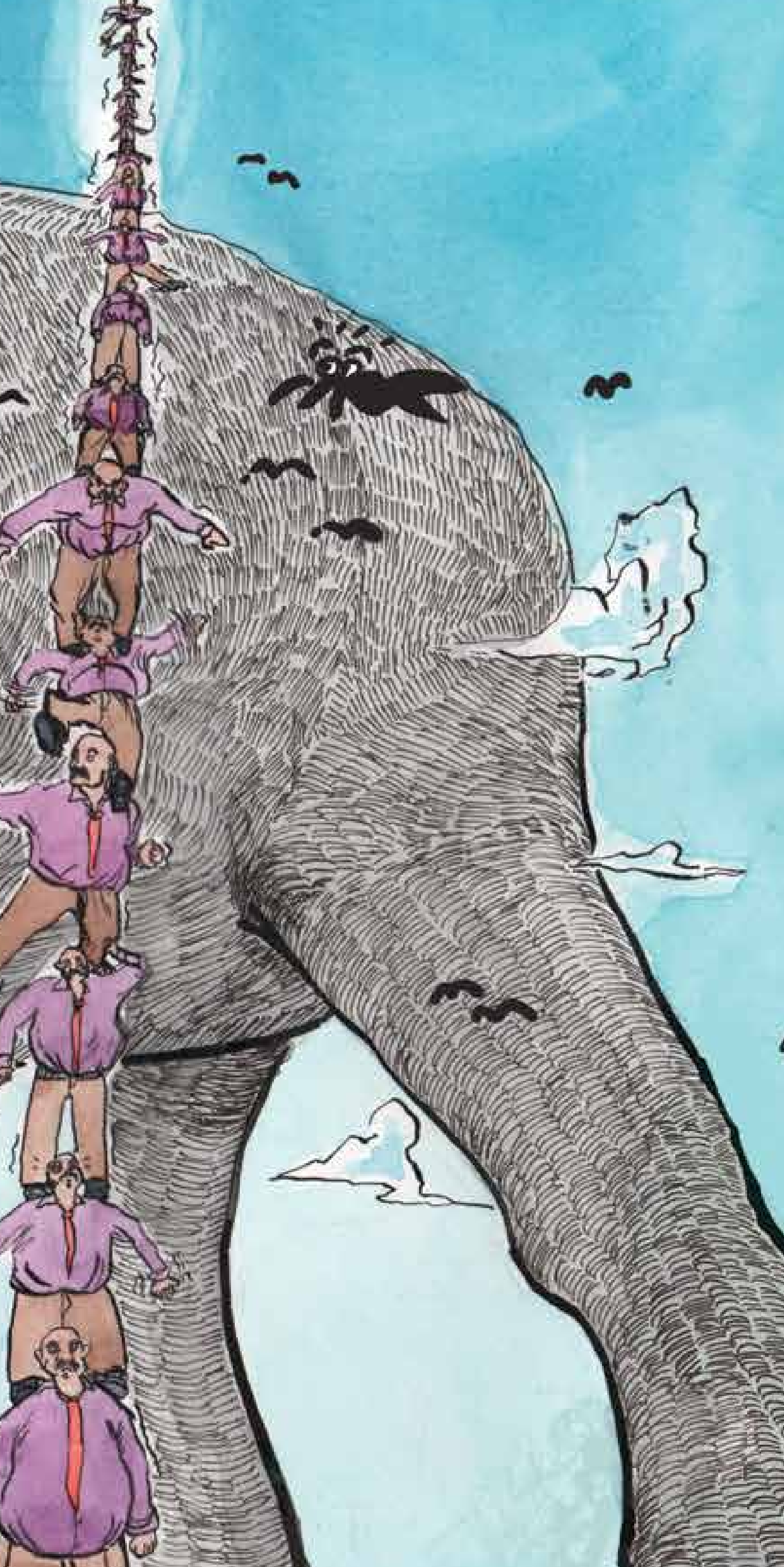
बात जहाँ पर खटक गई,
सुई वहीं पर अटक गई,
सुई हिलेगी, बात चलेगी
बात चलेगी, सुई हिलेगी,
बात सुई पर लटक गई।

हाथी

– प्रमोद पाठक



इस्माइल ने हाथी नहीं देखा था। लेकिन सुना था कि हाथी बहुत बड़ा होता है। वह अपने पापा को देखता था। पापा उससे काफी बड़े थे। पापा कहते थे कि हाथी उनसे भी बहुत बड़ा होता है। इस्माइल सोचता फिर तो हाथी कितना बड़ा होता होगा! पापा के ऊपर एक और पापा! नहीं, उनके ऊपर एक और पापा! नहीं, नहीं, उनके भी ऊपर एक और पापा! इस तरह वह हाथी के बारे में भूल जाता और एक के ऊपर एक खड़े पापाओं के बारे में सोचने लगता। उसे इस तरह सोचने में बड़ा मज़ा आता।



एक दिन पापा के साथ बाज़ार जाते हुए उसने हाथी देखा। हाथी देखकर वह बहुत हैरान हुआ। मन ही मन सोचने लगा, “इस हाथी को बनने में तो बहुत सारे पापा लगेंगे। ऊपर-नीचे, अगल-बगल, कितने सारे पापा लगेंगे! चार पापा तो इसके पैरों में ही लग जाने वाले हैं।”

हाथी और पापा के बारे में सोचते हुए उसे अचानक एक खयाल आया, “यह हाथी इतना बड़ा है तो इसके पापा कितने बड़े होंगे?” तुमको क्या लगता है, हाथी के पापा कितने बड़े होंगे?

चित्र : कुशान भट्टाचार्य



रस से बना बनारस है
और पानी से पानीपत
दोनों को जो साथ मिला दो
तो बन जाए शरबत

- वरुण ग्रोवर

चित्र : उजान भट्टाचार्य

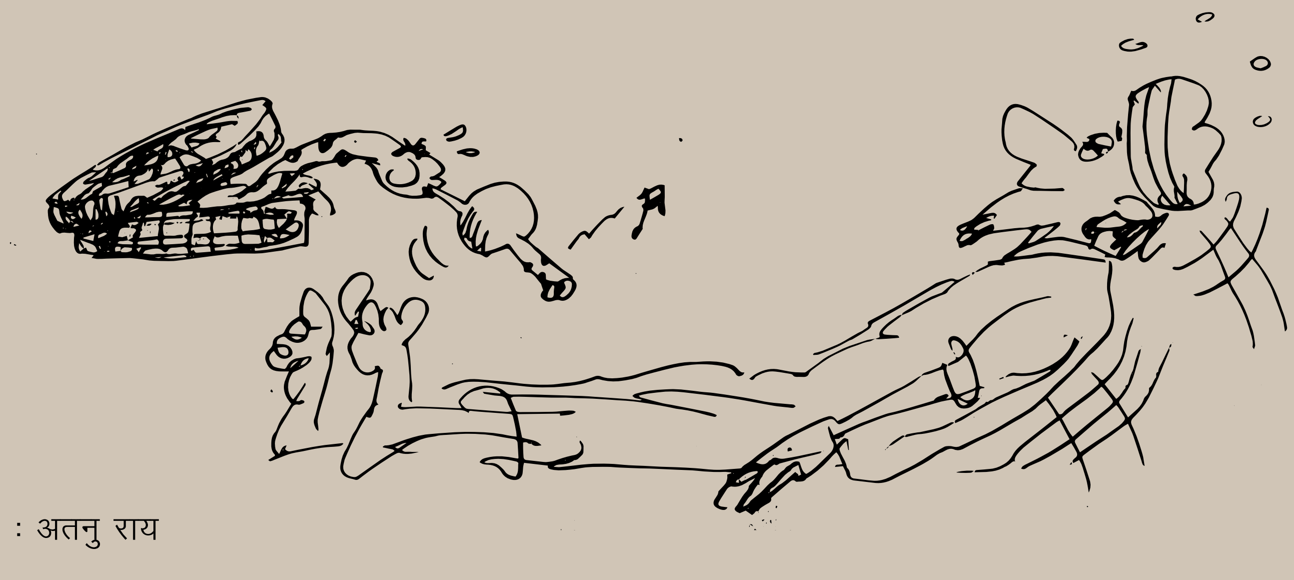


उड़ते उड़ते हुआ जहाज़...

- मोहम्मद साजिद खान

तितली उड़ी
और ऐसे उड़ी
कि उड़ते-उड़ते हो गई बाज़

बाज़ उड़ा
और ऐसे उड़ा
कि उड़ते उड़ते हुआ जहाज़



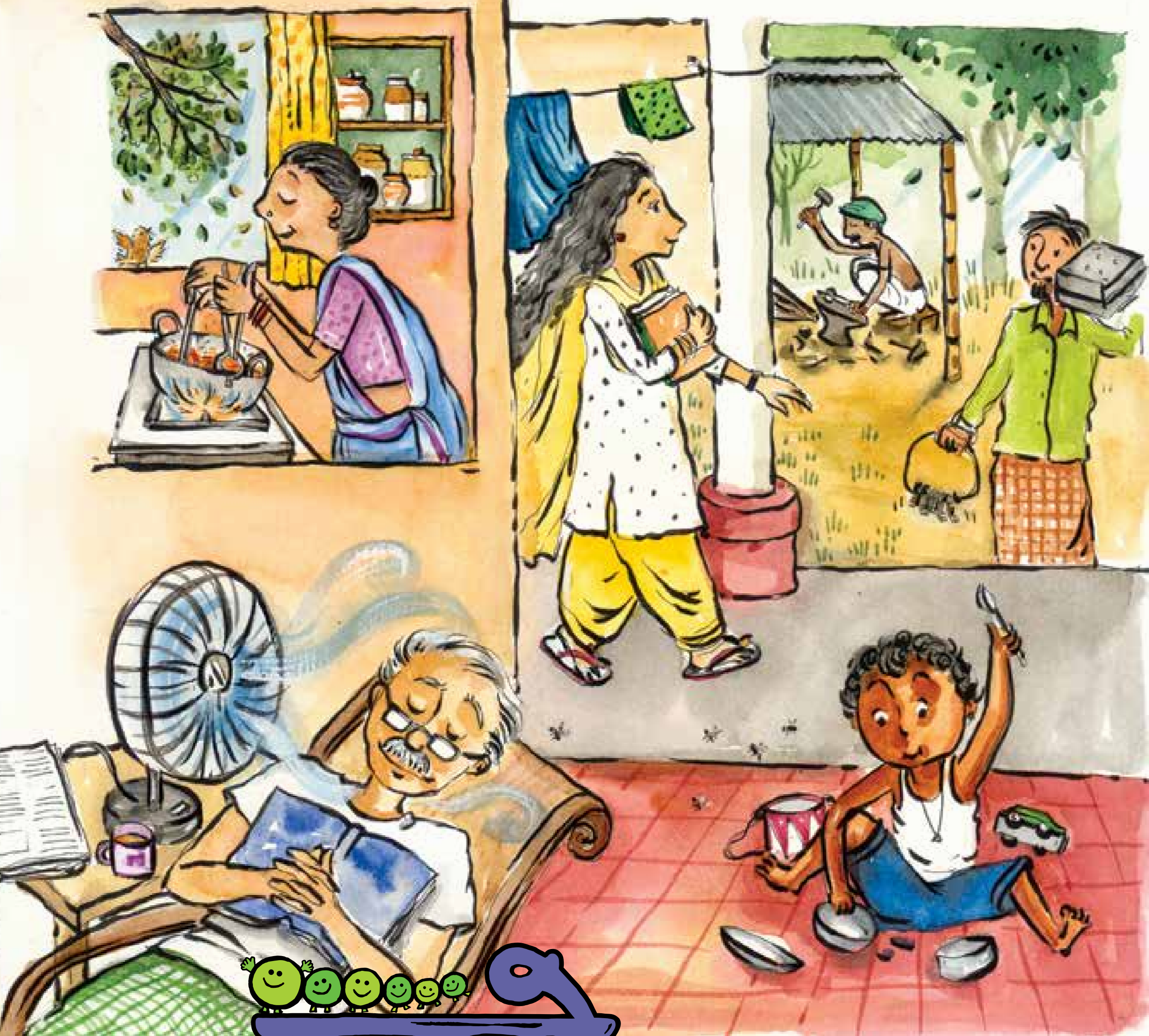
चित्र : अतनु राय

टन टन टन टन
टनन टनन
टन टना टन
टनन टनन।

सन सन सन सन
सनन सनन
सन सना सन
सनन सनन।

छन छन छन छन
छनन छनन
छन छना छन
छनन छनन।

- वीरेन्द्र दुबे



प्लूटो
इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादनः सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

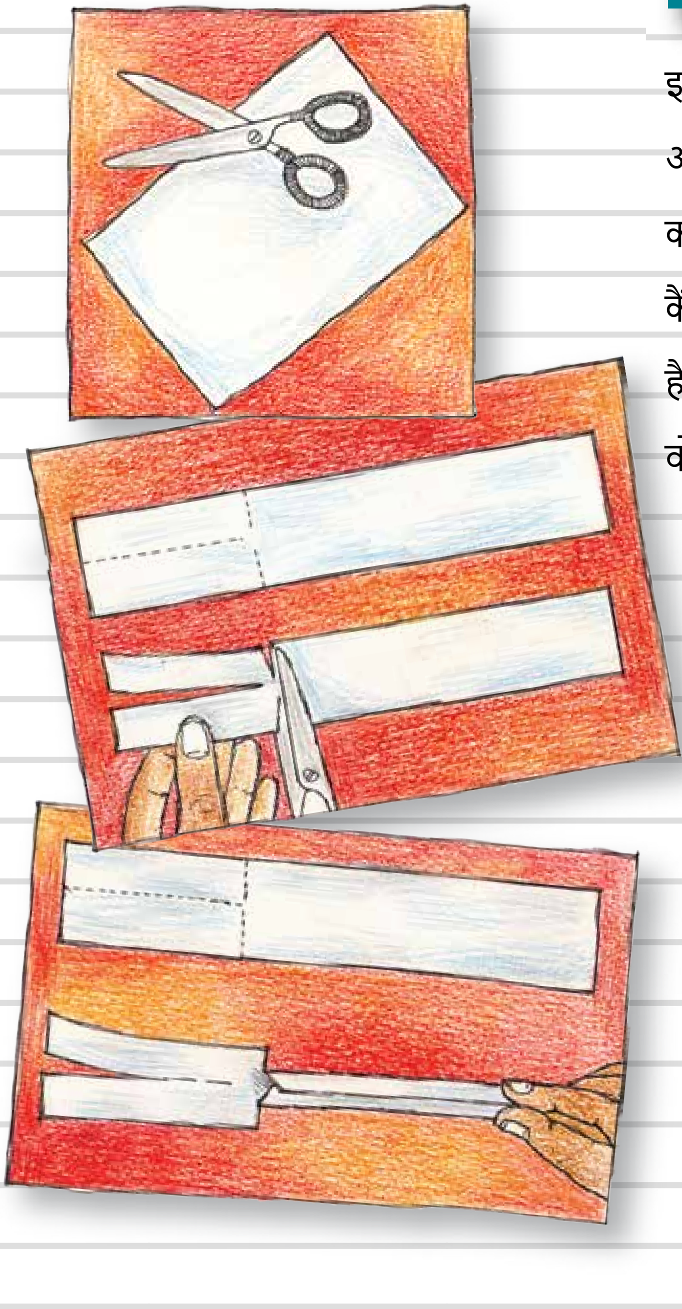
डिज़ाइनः प्रोइती रॉय

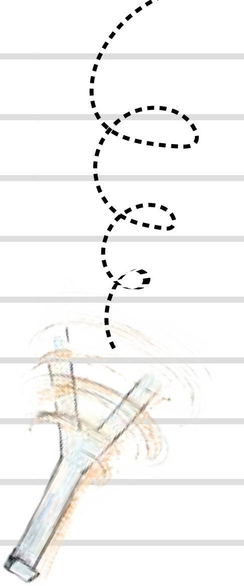
आवरण चित्रः डीपीएस लुधियाना, पुने और पटना के बच्चे

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः सुशील शुक्ल**

सम्पादकीय पताः
ई-7/413 एच आई जी, प्रथम तल
अरेरा कॉलोनी भोपाल - 462016
फोन - 0755 2446002, 0755 4939472
8989544927, 9109915118
ई मेलः pluto@ektaraindia.in
www.ektaraindia.in

हैलीकॉप्टर...





इस हैलीकॉप्टर को बनाने के लिए बस कागज़ और कैंची चाहिए। यहाँ दिए चित्रों को देखते हुए कागज़ पर निशान लगा लो। फिर बड़े ध्यान से कैंची से काट लो।

हैलीकॉप्टर को ऊपर उठाओ और छोड़ दे।

वो गोल-गोल घूमता हुआ नीचे उतरने लगेगा...



आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका



हरसिमरन कौर



भाविका अरोड़ा

मुझे बिल्लियाँ नहीं पसन्द। एक बार मैं अपनी मम्मी के साथ जा रहा था। अचानक एक बिल्ली हमारी गाड़ी के सामने आ गई। बिल्ली को बचाने के चक्कर में हमारा एक्सीडेंट हो गया। बिल्ली तो बच गई। हमारी गाड़ी टूट गई।

– अनहद



रैचल जैन



दक्ष मरवाह



आल्या





कियान



जसमेह



यशिका अरोड़ा

कुछ दिन पहले मेरे घर के पीछे से बिल्ली के रोने की आवाज़ें आ रही थीं। मैं अपनी दादी के साथ पीछे गया। तो देखा बिल्ली के दो बच्चे एक गत्ते के नीचे रो रहे थे। मेरी दादी ने एक कटोरी दूध उनके पास रख दिया। उन्हें दूध पीता देख मैं खुश हो गया।

- ईराज सिंग



काव्या जैन